पंचम अध्याय

उ प सं हा र

पंचम अध्याय

उपसंहार

इस अध्याय में हम अब तक के विवेचन का सार प्रस्तुत करेंगे तथा जो तथ्य प्राप्त हुए हैं उनको सम्मुख रखेंगे ।

अध्याय पहला -

इस अध्याय में नायिका से तात्पर्य क्या है ? नायिकाओं का प्राचीन स्वरूप कैसा था ? नायिकाओं का आधुनिक स्वरूप प्राचीन स्वरूप से किस तरह भिन्न है ? इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की कोशिश की है ।

उत्तर के स्वरूप सार रूप में हम कह सकते हैं कि आरम्भ में केवल नाट्यशास्त्रों में ही नायक-नायिका का वर्गीकरण एवं भेद-प्रभेद का वर्णन होता था, जिससे कि नाटककार अपने पात्रों के शील, मर्यादा का उचित रीति से निर्वाह कर सके ।

संस्कृत साहित्य में नायिकाओं का स्वरूप निर्धारित करने में कामशास्त्र, नाट्यशास्त्र और काव्यशास्त्र इनका योगदान रहा है । प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार नायिकाओं के साढे तीन सौ के ऊपर भेद बताए गए हैं, परंतु इनमें प्रकृति, अवस्था, कर्म, वय-भेद, नायक प्रेम तथा कामशास्त्र के अनुसार बताए गए भेद ही प्रमुख हैं ।

यद्यपि आधुनिक विद्वानों के मत से नायिकाओं का प्राचीन स्वरूप निर्धारित करनेवाला नायिका-भेद कम महत्वपूर्ण लगता है फिर भी नायिकाओं के प्राचीन स्वरूप की यह प्रमुख आधार शिला है ।

आधुनिक नायिकाओं का स्वरूप प्राचीन नायिकाओं के स्वरूप से भिन्न है । नायिकाओं का स्वरूप नायिकाओं के अंग-प्रत्यंग के वर्णन तक ही सीमित न रहकर साहित्य में नायिकाओं के मनोविश्लेषण का प्रयास आरम्भ हुआ और चरित्र-चित्रण को अपेक्षातया अधिक महत्व प्राप्त हुआ है ।

आधुनिक साहित्य में नायिका की परिकल्पना नारी के आधुनिक परिवेश, नारी की बदलती हुई परिस्थितियाँ आदि को लेकर की गई है जिनमें प्रमुखतया युग की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियाँ, साहित्यकारों का उद्देश्य एवं साहित्यकारों का दृष्टिकोण ये प्रमुख घटक हैं ।

अध्याय दूसरा -

प्रस्तुत अध्याय में गैंडा, अपराधिनी, कैंजा, किशनुली, कृष्णवेणी, माणिक, मेरी प्रिय कहानियाँ, पूतोंवाली, पुष्पहार, रथ्या, रतिविलाप, विषकन्या और स्वयंसिद्धा इन तेरह पुस्तकों में संग्रहित शिवानी की कुल अट्ठावन कहानियों का संक्षिप्त परिचय कराया गया है जिससे शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का स्वरूप और उनकी समस्याएँ समझने में सहायता हो सके ।

इन कहानियों का अध्ययन करने बाद कुछ तथ्य इस प्रकार प्राप्त होते हैं :--

१) सात-आठ कहानियाँ छोडकर बाकी सब कहानियाँ नायिका-प्रधान हैं। कहानियों के शीर्षक भी कहानी के नायिका - प्रधान होने का संकेत करते हैं ।

२) नायिकाओं के चरित्र-चित्रण में नायिका भेद परम्परा का पर्याप्त अनुसरण हुआ है ।

३) आधुनिक दृष्टिकोण से किए गए नायिकाओं के वर्गीकरण-अवासनात्मक, वासनात्मक तथा अन्य प्रकार की विविध नायिकाओं का चरित्र-चित्रण इन कहानियों में हुआ है जैसे माता, भगिनी, पुत्री, दादी, पत्नी, प्रेमिका, वेश्या तथा पतिता ।

४) इनकी कहानियाँ नायिका-प्रधान होने के कारण नायिकाओं की पारिवारिक,दाम्पत्य जीवन की, दहेज, अवैध सम्बन्ध,भ्रूण हत्या, पुनर्विवाह,अनमेल विवाह, विवाह विच्छेद, अशिक्षा ,अंधश्रद्धा,निर्धनता, आभूषणप्रियता,प्रौढ कुमारिकाओं की समस्या जैसी समस्याओं का चित्रण हुआ है।

५) इन कहानियों में न केवल समस्याओं का चित्रण हुआ है, अपितु इन समस्याओं पर कहानियों की नायिकाओं ने अपनी अपनी दृष्टि से समाधान भी प्रस्तुत किया है जिनके उदाहरण `तर्पण` कहानी की पुष्पा पन्त, `करिए छिमा` की हीरावती जैसी नायिकाएँ है।

संक्षेप में शिवानी की कहानियाँ नायिका-प्रधान है और उनमें नायिकाओं के विभिन्न रूपों के साथ साथ उनकी समस्याओं का चित्रण एवं उनका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय तीसरा --

इस अध्याय में शिवानी की कहानियों की नायिकाओं के विभिन्न रूपों की चर्चा हुई है। दो विभागों में इनका वर्गीकरण किया गया है --
(१) प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार तथा (२) आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार।

प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार जाति,धर्म, पति प्रेम, प्रकृति / गुण, वय, दशा तथा काल के अनुसार शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण किया है। इसमें प्रत्येक वर्ग की नायिकाओं के कम अधिक उदाहरण प्राप्त हुए है।

नायिकाओं के चरित्र चित्रण में चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। साथ ही साथ नायिका-भेद की प्राचीन परम्परा का अनुसरण भी पर्याप्त मात्रा में हुआ है। `विप्रलब्धा` इस कहानी का शीर्षक तो स्पष्ट रूप से नायिका - भेद परम्परा के अनुसरण की ओर संकेत करता है।

शिवानी की सर्वाधिक नायिकाएँ `स्वकीया` नायिका भेद के वर्ग की हैं। उनकी संख्या प्राप्त अठ्ठावन कहानियों में सत्रह हैं। छ: नायिकाएँ परकीया तथा तीन `सामान्या` वर्ग की हैं। स्पष्ट है कि लेखिका ने भारतीय नारी के पतिव्रता रूप के आदर्शों की स्थापना की ओर ही अधिक ध्यान दिया है।

जाति अर्थात् कामशास्त्र के अनुसार कुछ नायिकाओं के उदाहरण सर्वोत्तम तथा सजीव बन उठे हैं जैसे पद्‌मिनी नायिका का `भिक्षुणी` की किन्नी तथा हस्तिनी नायिका का उदाहरण `के` की डॉक्टर कमला।

आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार अवासनात्मक, वासनात्मक तथा अन्य वर्ग के अन्तर्गत शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का वर्गीकरण किया है।

अवासनात्मक वर्ग में सर्वाधिक `माता` भेद के अन्तर्गत सात नायिकाओं के उदाहरण प्राप्त होते हैं जिसमें `जोकर` की तिलोत्तमा देवी तथा `ज्यूडिथ से जयन्ती` की रमा सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

वासनात्मक वर्ग के असफल प्रेमिका नायिकाओं के उपवर्ग में आठ नायिकाओंका तथा असफल गृहस्थ नायिकाओं में दस नायिकाओं को रख सकते हैं।

सफल प्रेमिकाएँ तथा सफल गृहस्थ नायिकाओं के उदाहरण असफल प्रेमिकाएँ तथा असफल गृहस्थ नायिकाओं की तुलना में नगण्य है।

अन्य नायिकाओं में विधवा, पतिता, वेश्या, शर्विलक, हत्यारिन तथा महत्वाकांक्षिणी नायिकाओं के कतिपय उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं।

अध्याय चौथा --

प्रस्तुत अध्याय में शिवानी की कहानियों में नायिकाओं की समस्याओं पर विचार हुआ है। इन समस्याओंका अध्ययन करने के बाद शिवानी की कहानियों की नायिकाओं का स्वरूप और अधिक स्पष्ट होता है।

इन समस्याओं को देखने के पश्चात् हमारा यह मत बन जाता है कि आज की नारी स्वतंत्र है परंतु पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं है । आज भी निर्धनता, अंधविश्वास, रूढिवादिता, कुरूपता इतनाही नहीं सौन्दर्य भी आधुनिक नारी के पथ में बाधाएँ बनकर खडी है ।

शिवानी की बहुतांश कहानियाँ पहाडी परिवेश की रही है । पहाडी प्रदेश में शिक्षा का अभाव, अर्थाजन के साधनों की कमी, देवी देवताओं पर गहन विश्वास, रूढिवाद तथा परम्परावाद के कारण निर्माण अनेक समस्याओं का मुकाबला पहाडी परिवेश की कहानियों की नायिकाओं को करना पडता है ।

साथ ही साथ विवाह विघायक विविध समस्याओं का अनमेल विवाह, प्रेमविवाह, पुनर्विवाह, अवैध सम्बन्ध, भ्रूण हत्या, विवाह विच्छेद, विधवा समस्या आदि समस्याओं का भी बडी ईमानदारी के साथ चित्रण हुआ है ।

दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन की समस्याओं को भी लेखिका ने उचित न्याय दिया है ।

लेखिका ने न केवल नायिकाओं के चरित्र-चित्रण के माध्यम से समस्याओं को उपस्थित किया बल्कि इनकी कहानी - नायिकाएँ अपनी अपनी तरफ से इन समस्याओं पर समाधान प्रस्तुत करती हुई भी नजर आती है ।

इन समस्याओं के अध्ययन से एक और बात पर सामने आती है । वह यह कि इन समस्याओं की शिवानी की कहानियों की नायिकाओं पर जो प्रतिक्रिया होती है उससे उन कहानी नायिकाओं का स्वरूप और अधिक सुस्पष्ट होने में सहायता मिलती है ।

अस्तु शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के स्वरूप का अध्ययन करने के पश्चात् सार रूप में हम कह सकते हैं कि शिवानी की अधिकांश कहानियाँ सोद्देश्य है । कहानियाँ नायिका-प्रधान है फिर भी नायिकाओं के एकांगी रूप उनमें नहीं दिखाई देते ।

प्राचीन नायिका-भेद की शैली के साथ-साथ आधुनिक मनोविश्लेषण तथा चरित्र-चित्रण पद्धति दोनों का मणि-कांचन समन्वय नायिकाओं के चित्रण में दृष्टिगोचर होता है।

इनकी कहानियों में विभिन्न समस्याएँ निरूपित हैं जिनके विविध रंगों के चित्रों को देखकर नये युग के सन्दर्भों की सशक्त समस्यामूलक कहानीकार के रूप में शिवानी निश्चित ही सफल कहानीकार मानी जायेगी।

शिवानी एक बहुत और बहुश्रुत लेखिका हैं। एक ओर वे कुमाऊँ के ग्रामीण अंचलों में रही हैं, दूसरी ओर राजा महाराजाओं के महलों के वातावरण से भी वे सुपरिचित हैं। उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से बंगाल तक फैले भारतीय जनजीवन को घूम-घूमकर खुली आँखों से देखा है। सरकारी अफसरों और नेताओं के खोखले जीवन को भी उन्होंने नजदीक से देखा है। इसी वजह से शिवानी की कहानियों का वातावरण सजीव और वैविध्यपूर्ण बना है।

शिवानी की कहानियों में विभिन्न समस्याओं के साथ पुरातन मानवीय मूल्यों के पुनरुत्थान की कोशिश भी की गई है।

इस तरह 'करिए छिमा' कहानी पढकर शिवानी साहित्य के अध्ययन की प्रेरणा मेरे लिए एक सुनहरा मौका सिद्ध हुआ है।

सन्त कबीर जी के शब्दों में ---

'लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल'

की अवस्था का मैंने अनुभव किया।